

पूति न उधालि ना॥ ॥ ददि न धी ग न यति वा मसि दामे का ना॥
स ग न मं धु स ना आ व गालि न धि ना॥ ॥ नू ति सं हा न मा या वि ध्व
वि या यि ना श्रु न रु य रु या धि दू लि न रु न धा॥ ॥ व रु धे न यु सा
दि न द स रु न यि या श्रु ल रु ल न मा नू सि दि व ल यु सा दा॥ ॥ २५ ॥ ॥ २५ ॥
व रु धे न म ध्व धि लि दू मि यू ना इ य नि रु ना ला श्रु स रु ल द ज वं दि न वा सा॥

2561

卷之四

॥ नमामि देवि प्रीति

श्रीगणेशाय नमः

कदा नादि शतदिशि धिषु दायानि कुगल न ननि ॥ वायु वेद न
 नरक व ह्म गी १०० सा न आग्नि द धिनी प्रवदत्त ॥ ॥ वायु ४ भादि
 निद विस्ति न व ह्म ला १ य हि म सं रालि नि द वि धु म व ह्म ला द द्वा ॥
 ॥ ने स ल स रौ ना सि नि द ति न व द ना ला १ द हि नै वे दि का द वि धु म व ह्म
 ॥ व न्द्र ह्म न कान ना य व म द्वा र ज ना १ स स वि द्वा स र व न व न स

दे ना ॥ ॐ ॥ ॥ वा ग य द न ॥ अनित अन प्र ज न जा य ह्म मा ॥
 म नू म धु न व क ना या १ व क र्प ज न स प्र ज प्र स र्पा वि र्ति म नू म धु न व क ना या
 ॥ ॥ उ म नू न द ह्यि या १ व क र्प ज न स प्र ज प्र स र्पा वि र्ति म नू म धु न व क ना या
 वा दि आ वि ग न स स व नू न द ह्यि या ॥ ॥ रु नि र्म वी ज वि १ व नू न द ह्यि या
 वा दि हि न दि न अ हि अ कृ ग म सा न ॥ अ न स व द व व द्वा द स द वि मि र्ति ज न

मनसं दत्तं ॥

॥ निरुवनं नु द्रु ॥ कृत्वा यनरु वा दानीरुवनं नु द्रुय

कृ वि चार्दी वि च शक्तिनि रवन नानान नसं यु सा वि च रु वि पा ड य का का य

॥ ॥ अदि नि सं स न गु पु वा यं नु या य रु दि रा न ला ज अ ला वे श क न म

म न न रु य व न न रु मि रु न रु य मा नू ज य सं दत्तं ॥ ॥ ॥ वा ग ना क

न रु ण न रु नि नि ल य न सृ श्व वि श्व रु ग द स रु य रु न कि ल न्ना ॥

॥ द्रु द वि वा या नू नि म दा मा म कि द वि श्व रु ग न य मा दि सं म य न स न्ना य ॥

॥ आ म वे द य नान रु व र्वा न श्वा गु ध न मा द रु ग रु ल रु य द स्य ॥

॥ यं रं वृ ध ख न क रु रु श्वा मा न नू नि मा गु रु नू ज नू रु नू ज नू ॥

॥ म न गु ल रु न न री स ल ग न ध वि या श्वा न यी सि वा क व रु स न्ना स

रु यि ॥ ॥ ॥ न न रु द न रु वि ॥ न न मा रु रु क रु न रु य ध रु रु स रु रु

विसृज्यता धनुः

॥ न नास्तुं न नास्तुं न नास्तुं न नास्तुं न नास्तुं ॥

ददा जालिमान आगधनुः वज्रयः मूलाधनुः

॥ धनुः वसुसुखनदद

धनुः सुवैदसु सादि यचं दुमल ॥ ॥ मायाद रुचिनर्गु १ सादियकः

पुनसलमर्गः ॥ ॥ १ गगन गगनमाहि ॥ निवृत्त विसर्जिलिमद

अधिनि ज्ञानंदमू नृनिधना श्वजवालादिजा विगनसवना नानालस्यी

॥ १ गगन गगनमाहि ॥ निवृत्त विसर्जिलिमद

महाश्रीना ॥

॥ न नास्तुं न नास्तुं न नास्तुं न नास्तुं न नास्तुं ॥

॥ निलव

धनुः वज्रयः मूलाधनुः वज्रयः मूलाधनुः वज्रयः मूलाधनुः

कनामक तधना लाद जालै लैत सुधतिना ॥

॥ वज्रयः गगनवसुसुखनदद

पुनसलमर्गः ॥ ॥ १ गगन गगनमाहि ॥ निवृत्त विसर्जिलिमद

क्रिययधना बाधुवर्मकनि वीथिना ॥

॥ दिर्गविदिर्गका कास्यदिर्ग

॥ १ गगन गगनमाहि ॥ निवृत्त विसर्जिलिमद

五
三
二
一

14 15 16 17 18

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ विसृज्य सर्वं आनन्दमूर्तं ध्यायेत् ॥ तदा न संशयः ॥
 भगवत्पदं प्राप्नुयान् ॥ ॐ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ दाद आरुण न किमपि
 तस्मै न भवति कदापि ॥ तस्मात् ॥ ननु कदा वा न संशयः ॥ तदा न संशयः ॥
 विला ॥ ॥ तल्लला मा नृशंभु नला यासुत न संशयः ॥ तदा न संशयः ॥
 वक्र वा नृशंभु नला यासुत न संशयः ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यत्तत्तदयि नावाया १ गगननिजावर्तुर्वैलितजायामनुर्मदप्रवर्तना ॥
नियधदुखतद्वैरुदितप्रसन्नव्ययिमयिस्वयं हृदयानुदमविवर्तानि वज्र
नारुद्विनुदखमिज्ज्वा ॥ ॥ अग्निलिजावर्तुर्वैलितजायामनुर्मदप्रवर्तना ॥
वतनजाया ॥ ॥ अग्निलिजावर्तुर्वैलितजायामनुर्मदप्रवर्तना ॥
॥ अग्निलिजावर्तुर्वैलितजायामनुर्मदप्रवर्तना ॥

॥ १ ॥

श्रीगणेशाय नमः

प्रह्लादविजयम् ॥

नवसंविजयम् ॥

यार्यसमायम् ॥

समायम् ॥

विना ॥ ६६३

॥ आगिनिनु कृवि नखकं नशियि शन नामद ववियात्क

॥ कृयकं आगिनि नवन शायि शमनिकु न वरिया लउदि

॥ सासुदय न था न कृचियता ना १ रंडसूर्यद यिपुहन

॥ एनयिगदा जिरुम कृइ न विना १ नलनालिमा साउरुयनर

॥ ~~नागविरास~~ विविदि विरुल मा न विमसिदहन च १ दवि

श्रीगणेशाय नमः

वासनगनखननुकना ॥

निमालसदमर्षिमा ना ॥

लखनसंभवविना ॥

ननु कृयालिना ॥

तामनेचियसंखव ॥ ६६४

॥ नावयिनमामि श्रीसर्वजवि ना १ वरु आगिनिल

॥ वरुवा लादि जालिगनक धि १ कृति सीविलवि

॥ ^{विव} एमकृदहनमासे एरु कृन शनिल सीदा वगग

॥ दादसदुध जिया लालि वरु उवद य १ क रूना रू

॥ ~~नागविरास~~ उदिना नलयिय वव वं न

नाश्वरं सुदयं कंकाणं प्रहयना ॥ धालदुष्का प्रहवलि संनलितना ॥
 वखयनिर्लज्जनना ॥ दिनक प्रमदले मध्वगता ॥ कप्रना मरु
 प्रसप्तवकना ॥ दध्मज्जापिशा ययुर्गिनिदना ॥ दुवा सुप्रनलसिलसीना ॥
 ॥ गभज्जाकियवन वृत्तिगु प्रहगता ॥ वजवा नादि सिलनमिना ॥
 ॥ सागवतद्वं नाभा अर्वा निदिन वीमजान स्वज्ञकि प्रनना प्रसिना सा ॥ प्राग

धरमादुर्वदित्ययासागिरुवनयायाञ्चसलविजा॥ ॥ नमामिशीचर्तुम
 हानाखनाज्ञानमृदुरयश्चिह्नुरविस्वनाथविस्वयायिनविर्नविक्रमदाकाधना
 या॥ ॥ अतिविकनागाधयचद्रादृक्कनायाविदूतिकिजनाश्रयीदीन
 ज्ञानाककनयनावेतिर्नानासनाखद्वसजना॥ ॥ माधवाभायापूर
 दत्तवक्राजोदयिसागर्भियादृशरुलनाश्रमलसंसायाजागविमार्गसुनना

सर्वसूक्तप्रिया ॥

॥ विनाग वरुह वरुयंक वरुह नस्यनिदिनरवज्ञ नरु

मियास ॥

॥ मातरुदयनिस्त्रिपविद्युसुता ॥ नविष्ठासि शम्भयं द्रुगग

नविष्ठासिपिष्वरा ॥ ७० ॥

॥ विनागनाम ॥ सकल जगन्मृगसुख ॥ लविष्ठास्यन

यज्ञकनकनिगसुखादिना ॥

॥ सम्यक् ॥ नमयि शस्यं विविधिविष्ठा

स्यविनासमसुख ॥

॥ दविष्ठासि नुद्रुमधि नदल ॥ वरुयदरु

हिष्ठा ॥

नस्य ॥ श्रीवज्र जुदाग हीमंत्रमर्चिनिनेस्वगी ॥

हृहृ ह उ

उनेनोवाजिम्बरा मत्त ल ल

सुधासि सनमलमर्तुल। संधि नलयना ॥ द्वादसहज उ वदनसुखलीना वज
 वालादि कंधा आतिगना ॥ ॥ हृदय ददिहसु न नमापसंयल स बाधि
 यात्य ॥ द्वाद आतिग न अद्य संला य ना वयिदानं श्रीसंख नाया ॥ ॥
 कलिसर्पं ग ग व म्भितिसु नाकनेति उ म ल सुह सातिगा ॥ मंरु यप्रिसु क
 यालख ह्ना क वा सव ल सु व प्रसि च धना ॥ ॥ यं वजिन व ल मं क न जा

लं कौताख दमका आतलल विहविना ॥ आलि कापि जा वावयि आद्य व म्भ
 नि वास न रु न न ॥ ॥ नल सिप ना ना आलं रु सिख यदि थ च ह्नी नि
 कल नलिदया ॥ ज ल ज ल माल नु इ याय सल ना ग व नि व द मादि वज गिना
 ॥ ॥ ॥ ना ग ल द गि ने ॥ ई वि नि स ल व वि ना सा य कायि सु ॥ उ थ रु ना ठा म ह्नु
 ल ला या ॥ ॥ यं रु का म ल ज ग न नि वा सि या ल ॥ ॥ अ मि य अ मि य नि लं रु

सि ५२

नदस्य १ सदस्यस्य निया लजिन हं न वयि स ॥ ॥ ५ वर प्राणिनी उलः
 मवलीया १ वर वा जादि अलिग न काल ॥ ॥ ३ धर वा द कल न क वालिका
 १ ग्रंथं जय अलिग न तिलि नीलं वर्धु वालिका ॥ ॥ ॥ सर्वना भगना सा
 नं सर्वना था नेगे नयं सुवध मा ग ने न मा द सु म धु लं म न मं ॥ ॥ ॥ सर्व ल क
 न संयं क स व न न वि वं जि नं सु मं न र द का या गं रा ख मं धु रं मं न मं ॥ ॥ ॥

५२ — ५३ — ५४ — ५५ — ५६ — ५७ — ५८ — ५९ — ६० — ६१ — ६२ — ६३ — ६४ — ६५ — ६६ — ६७ — ६८ — ६९ — ७० — ७१ — ७२ — ७३ — ७४ — ७५ — ७६ — ७७ — ७८ — ७९ — ८० — ८१ — ८२ — ८३ — ८४ — ८५ — ८६ — ८७ — ८८ — ८९ — ९० — ९१ — ९२ — ९३ — ९४ — ९५ — ९६ — ९७ — ९८ — ९९ — १०० —

सा निध मा गं स रं ह न व र्था वि स व कं स म न र द वा वा गं रा ख म धु लं म न
 मं ॥ य छि ॥ स व स व स व वि नं स ध य क र्ति नि म तं स म न र द वि न गी धा र व म
 धु ल सा ल धि ॥ ३ न ॥ सं य र्थे स र्व ज ग न म ना र्थ र्त्त स व न ला ना ति ना पि ना स व
 वि क य भा द क ल नं दा कि नि हं ल का जि ना ज व क य लि व न ठ जि न गु न हं ह न
 द य भा श क कं ज स्या न स्य क पा नु ल रु स्य म न सा नि स य स ध य दि ना ॥ ॥ ॥

२७२५५

[illegible]

लयकमयसाधना॥ ॥ दृष्टका प्रवक्तृवीर्यकर्मलक्षणनकाकिसिद्धा
 या प्रगनाश्रीरुद्रादियालंघनं गिलि जालं धाधेलियुक्तमस्तु त्वजाननं
 ॥ ६७ ॥ २० ~~मणिमातासि~~ ॥ वीतास ॥ द्विहृत्प्रवक्तृवद ननयायै
 नकसायानित्तावन ॥ ॥ नमादवि वृद्धकाकिनिर्विषयननिश्चितवय
 यिनैजिनह्वनदायनि ॥ ॥ ददिनकल वज्रवि नासिनदधनं श्याम

विष्णु देव गणेश

कलाठक व नुमा ज सं विगयि ॥ ॥ न न निम घु न मा सु उ दिया लग
मन १ नवन नेयल व न स न नं य व ॥ ॥ श्री विष्णु नि द वि सल
नल मादिना १ सकल अधि सिद्धि ददि म मा ना ॥ ॐ ॥ **गणेश नदि ॥ श्री**
व न ने ला मा द वि नि ह व न ना थ १ य र्वा न न था वि न व व र्ध द द ॥
॥ न मा मि १ श्री पू र्ण ग वे ला १ ह ल क शि गु क स लि वे र्ज ग गि नि स न न ॥

॥ प व दि ग वि न ह ले न व नि ल व र्ध द द १ द दि न या न ध र्म वि द नि
म ला ॥ ॥ द स म लि र्वा नि ग गि नि द वि १ ग ग र्ज नि लि ला व र्ज द का न स ग र्ज
॥ ॐ ॥ **गणेश नदि ॥** उं त व ध क व र्ज द का ला न का नि ला नि लि र्वा ये यि
या त १ स न यि य न न ल म ला का ध ल अ वि य धि न द ॥ १ ॥ घ
घ या द य १ स र्ध द ना न कि ल य द र्द द या य द ल १ उं व र्ज कि ल य व र्ज ध न

विष्णु देव गणेश

आहू काय वाकचिह्न किलयनिधी वज्रसत्त्वया आधिया लब्ध नूतनसिधि
युद्धं मां हृदयं ॥ १ ॥ यद्दिगदालका काननलहि नाकुदमिधालन
या २ चदगुलिष नासमसा नादवाधियनिगनकिलयनि ॥ ३ ॥ उक्तं
नदिगदालका उक्ताननल ॥ ४ ॥ मवधूननाहस्वमवदना ॥ लोदम
हालसमसानकुशोधियनिगनकिलयनि ॥ ५ ॥ यद्विदमदिगदाल

खानाननलमिधू या नूननूविकनत्त्या १ दालाकलस्मसानवानाधियनि
गनकिलयनि ॥ ६ ॥ दद्विदमदिगदालाकलाननलकनकविरुदहा
यद्यलनादी १ कीलकहे जगमसासा नालयुवनाधियनिगनकिलयनि ॥
७ ॥ दद्विदमदिगदालाकलाननलकनकविरुदहा १ कुदमिधालन
महास्मसानल नू आधियनिगनकिलयनि ॥ ८ ॥ दिगिदवलका नः

इति लघुनात् न न नूकाधत्वा १२। स्म वलङ्गनात् न मदा तमसाना
स माङ्गलाधियनि गनकि। तयनि ॥ ८ ॥ वायुश्च वलकात् दविजमदं
नियलङ्गस्यामनन कला वदनि १५। लाध कालति खमस्मसा नौ ल वाणाः
धियनि धंग न किलेयति ॥ ९ ॥ ॐ ॥ न्न वनका १६। दवीयममैधनी
यं ॥ म कृष्ण विक्कन लया १७। दुस्म सो नौ की वी किली या व न मदा स्मसाना

अरुगाधियनि गदा की नयति ॥ १० ॥ उर्ध्वश्च वक्रवति उर्ध्वसा १८। मात्र
विद्यनद्वननं यीरा ददा १९। वक्रवति विम मि गदा सकर्तुं स्वचत्राधियनि
गदा की नयति ॥ ११ ॥ यं र नाउ का ध अति निम्र मूयति पातात्र वासि
नं धमात्रद्वननं २०। पि दवी भूत्तत्र गदा २१। घना गतिर्कं रुचत्रिमात्र
गदा की नयति ॥ १२ ॥ दह दि ददा हं काला लघु न मा मि दसको धल ॥ वा

७५०

यास्य वल यदा न यानि वेद्युनि वारु न ॥ ॥ १ ॥ न ग रं स वि म ग उ ३
जिन उ ह व द धा य त्रिया कम न वृ त्रि स अ ह व त्रि १ उ म न क न र्हि का
ध न गि गू ना वाम ख ल्वा म क पा स ध न ॥ ॥ धी स व न या वा क्क सि तु द
उ तु त्रि ना १ मा न यि प्र चा य यि या त्र वि मा या सा स र व म द्र सि ना ॥ ॥
पा स व द म मू ल वाम म धा ध न या व न न सि न मा ना १ नि न द त्रि न त्रि दि

॥ १३

विषय

त क न का र च वृ स ख अ ति वि दू ला ध न ॥ ॥ अ त्रि ध रं न व चा य ३
यि स का त्रि ना ति वि स म द्रा १ वि स द त्रि स अ ह च द्र उ रा ह द व्या द
च म र व उ म द्रा १ वि स वि न म ध ल ना य द गि नि च द्र म द वि न वि न १
क नू न मृ ग म वि न वि न स व न र उ वि स च ल स सा ध न ॥ ॥ ॥
~~विषय~~ वि स य वि स व व प न स आ ग न यि च द्रा त्रि जी ना रि क

